छत्तीसगढ़ शासन

Chhattisgarh TRTI
TRIBAL RESEARCH AND TRAINING INSTITUTE

बैगा

विशेष पिछड़ी जनजाति

के तीज-त्यौहारों का मोनोग्राफ अध्ययन

आदिमजाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान

नवा रायपुर अटल नगर, छत्तीसगढ़

शासकीय उपयोग हेतु

प्रतिवेदन क्रमांक : 14

Chhattisgarh TRTI
TRIBAL RESEARCH AND TRAINING INSTITUTE

बैगा विशेष पिछड़ी जनजाति
के तीज-त्यौहारों का मोनोग्राफ अध्ययन

: निर्देशन :

शम्मी आबिदी (आई.ए.एस.)

संचालक

प्रस्तुतिकरण : शिव कुमार बांधे

छायांकन : मोहन साहू
ईश्वर साहू
आनंद सिंह परमार

आदिमजाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान

प्राक्कथन

भारत सरकार द्वारा अनुसूचित जनजातियों में से कुछ निश्चित जनजातीय समुदायों को विशिष्ट मापदण्डों यथा स्थिर या कम होती जनसंख्या, न्यून साक्षरता दर, कृषि की आदिम तकनीक एवं आर्थिक पिछड़ेपन के आधार पर देश में 75 जनजातीय समुदायों को विशेष पिछड़ी जनजाति (Particularly Vulnerable tribal Groups) घोषित किया गया है, जिसमें से बैगा छत्तीसगढ़ राज्य की 05 विशेष पिछड़ी जनजातियों में से एक प्रमुख जनजाति है।

बैगा जनजाति छत्तीसगढ़ राज्य के कबीरधाम, बिलासपुर, मुंगेली, कोरिया गौरेला-पेण्ड्रा-मरवाही एवं राजनांदगांव जिले में प्रमुखता से निवासरत हैं। इनमें ओदरिया, ढढिया, करकुटिया, मछिया, घुटिया, देवड़िया आदि प्रमुख गोत्र पाये जाते हैं। इनके द्वारा बैगानी बोली में परस्पर संवाद किया जाता है।

बैगा जनजाति की अर्थव्यवस्था मुख्यतः वनोपज संकलन के साथ-साथ कृषि, पशुपालन, मजदूरी, मत्स्य आखेट आदि पर आधारित है। इनके प्रमुख देवी-देवता रातमय देवी, नागा बैगा, मरादेव, बहरवास, मसवासी माता आदि हैं। लोक परंपरा में रीना, मायरीना, करमा, झुलनीपार, दधरिया, गीतकारिन आदि लोकगीत एवं लोकनृत्य है।

बैगा जनजाति में तीज-त्यौहार एक महत्वपूर्ण धार्मिक एवं सांस्कृतिक पक्ष रहा है, जो अपने आराध्य देवी-देवता के प्रति समर्पण एवं श्रद्धा को अभिव्यक्त करता है। बैगा जनजाति प्रकृति आधारित देवी-देवताओं की पूजा-पाठ वार्षिक अथवा विशेष अवसरों पर करते है, तीज-त्यौहारों में ये कृषि कार्य, शिकार वन से प्राप्त जड़ी-बुटियाँ, वनोपज, कंदमूल आदि का संग्रहण के पूर्व अपने आराध्य से आशीष प्राप्त करते हैं तथा निर्धारित तिथि एवं स्थान पर धार्मिक मुखिया पूरी विधि-विधान से पूजा-अर्चना कर सामुदायिक सुख-समृद्धि की कामना करते हैं।

संचालनालय, आदिमजाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान द्वारा बैगा जनजाति के तीज-त्यौहार पर आधारित एक मोनोग्राफ प्रकाशित की गयी है। हम आशा करते हैं कि संस्थान के अनुसंधान दल द्वारा तैयार की गयी इस पुस्तिका में दर्शित तथ्य राज्य के संबंधित जनजाति समुदाय एवं जनजातीय संस्कृति में रूचि रखने वाले लोगों के लिए लाभप्रद एवं उपयोगी होगी।

शम्मी आबिदी (आई.ए.एस.)
संचालक
आदिमजाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान
रायपुर (छ.ग.)

बैगा विशेष पिछड़ी जनजाति

प्रस्तावना

राज्य में निवासरत विभिन्न जनजातीय समुदाय अपने विशिष्ट सांस्कृतिक मूल्यों, जीवन संस्कारों, रीति-रिवाजों, धार्मिक जीवन, राजनैतिक संगठन तथा परम्परागत रुप से किये जाने वाले कार्यो के आधार पर पृथक दृष्टिगत होती है। जो इनके विशिष्ट जीवनशैली को निरुपित करती है।

प्रत्येक जनजाति समुदाय अपने सांस्कृतिक मूल्यों के कारण अपनी अलग पहचान संजोये हुए होती है, किन्तु जनजाति समुदायों में मनाये जाने वाले तीज-त्यौहार उत्सव आदि में एक बात हमेशा एक जैसे होते है वो समाज के लोगों के सुख दुख पर केन्द्रित होता है।

जनजातीय समुदायों में देवी-देवताओं को हमेशा प्रसन्न रखने, कृषि अच्छी होने, शिकार करने, नये फसलों से जुड़े कर्मकाण्डों की सभी जनजातियों प्रायः एक समान अवधारणाएँ में होती है। भले ही धार्मिक कर्मकाण्ड की विधियां अलग-अलग होते है तथा देवी-देवताओं को प्रसन्न करने के लिए जादु-टोना तथा बलिदान का भी सहारा लिया जाता। जनजातीय समुदायों में पाये जाने वाले लोक संस्कृतियां, तीज-त्यौहार तब तक ही अपने मौलिकता को बनाये रखते है। जब तक वह जनजातीय समुदाय अपने लोक संस्कृति के बंधनों का पालन करता रहता है, किन्तु वह जैसे ही लोक संस्कृति का पालन नही करता या अन्य समुदाय के संपर्क में आ जाता है वैसे ही उनकी लोक संस्कृति व परम्परा पर भी बाहरी प्रभाव पड़ने लगते है।

इस अध्ययन में कबीरधाम जिले के बोडला विकासखण्ड के बैगा जनजाति द्वारा मनाये जाने वाले तीज-त्यौहार एवं उत्सव के बारे में उद्देश्य मूलक जानकारी का समावेश किये जाने का प्रयास किया गया है।

अध्ययन का उद्देश्य -

1 बैगा जनजाति के धार्मिक जीवन एवं लोक परम्पराओं के आधार पर मनाये जाने वाले तीज-त्यौहारों / उत्सवों का अध्ययन एवं अभिलेखीकरण किया जाना।

2 बैगा जनजाति में प्रचलित तीज-त्यौहारों एवं उत्सवों का उनके सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक जीवन के साथ जुड़ी मान्यताओं का अध्ययन।

3 बैगा जनजाति के परम्परागत तीज-त्यौहारों एवं उत्सवों में हुये परिवर्तनों का अध्ययन।

अध्ययन क्षेत्र

बैगा जनजाति के तीज-त्यौहारों एवं उत्सवों के मोनोग्राफ अध्ययन कार्य के लिए कबीरधाम जिले के बोड़ला विकासखण्ड के ग्रामों का चयन किया गया है।

अध्ययन प्रविधि

बैगा जनजाति के तीज-त्यौहारों एवं उत्सवों के मोनोग्राफ अध्ययन हेतु प्राथमिक तथ्यों के संकलन हेतु उद्देश्य मूलक समूह साक्षात्कार, अवलोकन एवं छायाचित्र प्रविधियों का उपयोग क्षेत्रकार्य के दौरान किया गया। क्षेत्रकार्य हेतु गामों का चयन उद्देश्य मूलक निर्दशन पद्धति (Purposive sampling mathod or Objective Oriented Modeling Mathod) से किया गया।

द्वितीयक तथ्यों का संकलन प्रकाशित सम्बन्धित शोध पत्रों, पुस्तकों, जनगणना एवं शासकीय प्रतिवेदनों से किया गया है।

बैगा जनजाति में तीज-त्यौहार, उत्सव

जनजातीय समाज की विशेष पहचान उसकी लोक संस्कृति और संस्कृतियों की पहचान उसके पर्व-त्यौहारों से अभिव्यक्त होती है। जनजातियों में धार्मिक जीवन, तीज-त्यौहार का मुख्य आधार उससे जुड़ी आस्था से है जो उन्हें एक धर्म से जोड़ती है। किसी समुदाय विशेष में किसी अध्यात्मिक शक्ति के अनुरूप क्रिया-कलाप व कर्मकाण्डो का अनुशरण करना एक धर्म कहलाता है।

जनजातीय समाजों में पारलौकिक शक्ति पर अत्यधिक विश्वास पाया जाता है। इन्हीं अलौकिक शक्ति द्वारा संपूर्ण श्रृष्टि के जड़ अथवा चेतन दोनों ही नियंत्रित एवं संचालित होते हैं। अतः इस अलौकिक शक्ति के प्रति श्रद्धा, विश्वास एवं भय की भावना से ही जनजातियों में धर्म की उत्पत्ति होती है। यह भावना ही हर संभव इन अलौकिक शक्तियों को प्रसन्न रखने के लिए प्रेरित करती है। जनजातीय धर्म नियंत्रित एवं संचालित करने के लिए समाज में नियम एवं कानून का सृजन होता है, जिससे अलौकिक शक्ति के प्रकोप से सुरक्षित रह सकें।

अतः जनजाति समुदाय द्वारा अलौकिक शक्तियों के रूष्ट या अप्रसन्न होने से उनके सामाजिक, आर्थिक जीवन पर दुष्प्रभाव उत्पन्न होना माना जाता है। इस कारण भी जनजातीय समुदाय विभिन्न प्रकार के कर्मकाण्डों के माध्यम से पूर्वजों को प्रसन्न रखने तथा अपने भय को दूर करने का प्रयास करते है। समाज के लोग जिसे पवित्र मानते है उन्हें अपवित्र वस्तुओं से दूर रखते है। इसके लिए वे अनेक विश्वासों, आचरणों, संस्कारों एवं उत्सवों को जन्म देते है।

जनजातीय समुदायों में विभिन्न देवी-देवताएं, कुल-देवता, पूर्वज-देव, गोत्र देव, ग्राम देव, वन देवी-देवताएं होती हैं। जनजातीय समाजों में मान्यता पायी जाती है कि इनके प्रसन्न होने से सुख एवं नाराज होने से दुख की प्राप्ति होती है। अतः इन शक्तियों, देवी-देवताओं के रूष्ठ होने के भय से इनको प्रसन्न रखने के उद्देश्य से विभिन्न अवसरों पर पूजा-अनुष्ठान किया जाता है। जनजातीय समाज तिथियों, अवसरों के अनुरूप विभिन्न पर्व एवं उत्सवों का आयोजन कर इन सर्व शक्तियों के प्रति श्रद्धाभाव अर्पित कर अपनी मंगल कामना के लिए प्रार्थना करते हैं।

इसी प्रकार की अवधारणा बैगा जनजााति में उनकी आस्था के लिए है। बैगा जनजाति में उनके द्वारा मनाये जाने वाले तीज-त्यौहार उनके आर्थिक जीवन से संबंध होता है। आर्थिक क्रियाओं के प्रारंभ एवं अंत को उनके द्वारा पर्व या त्यौहारों के रूप में धार्मिक अनुष्ठानों के माध्यम पूर्ण किया जाता है। इन धार्मिक अनुष्ठानों में वे अपने ईष्ट देवों, आजा-दाता (पितर) व पूर्वजों की उपासना उनके जीवन से जुड़े विभिन्न क्रियाकलापों में किसी प्रकार की विघ्न-बाधा से सुरक्षित करने के उद्देश्य से की जाती है।

बैगा जनजाति में उनके देवी-देवता के वास्तविक या काल्पनिक रूप, निवास या वास, अलौकिक शक्ति, अनुष्ठान लोकाचार के रूप में पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही है। इन देवी-देवताओं की पूजा/अनुष्ठान की तिथियां, सामग्री, स्थान व कर्मकाण्ड की पद्धति निश्चित होती है।

इनके द्वारा मनाये जाने वाले प्रमुख तीज-त्यौहार तथा उत्सव/मड़ई व तिथियां निम्नांकित है -

क्र.	तीज-त्यौहार	उपलक्ष्य	माह (स्थानीय)	अंग्रेजी माह
1.	जवारा (नवरात्र)	निरोगी हेतु	चैत्र	अप्रैल–मई
2.	अक्ती	बारिश का अनुमान	बैसाख	मई–जून
3.	बिदरी	फसल बोआई	बैशाख एवं जेठ माह के अक्ती के बाद	मई–जून–जुलाई
4.	हरेली	पशु, घर एवं ग्राम सुरक्षा	सावन	अगस्त
5.	देवली	फसलो को कीटों से बचाने या फसलों को निरोगी रखने	सावन	अगस्त
6.	पंचमी नवाखाई	कृषि उपज	भादो	सितम्बर
7.	नवाखाई	कृषि उपज	भादो	सितम्बर–अक्टूबर
8.	देवारी (गोवर्धन पूजा)	फसल की कटाई	कार्तिक माह	अक्टूबर – नवम्बर
9.	मोहती नवाखाई	जंगली जानवर एवं जहरीले जन्तुओं से सुरक्षा के लिये	08 कार्तिक माह एवं 09 वर्षाकाल के बीत जाने पर अर्थात् लगभग 09 वर्ष में एक बार	अक्टूबर–नवम्बर
10.	छेरता	फसल की कटाई	पुष माह	नवम्बर
	उत्सव तथा मड़ई			
11.	दशेला नाचा	कृषि उपज	कुंवार से पुष	अक्टूबर से फरवरी
12.	मड़ई	उत्सव		फरवरी–मार्च
13.	फाग नाचा	वनोपज संकलन के प्रारंभ	फागुन माह	फरवरी–मार्च

प्रमुख तीज त्यौहार

1. जवारा (नवरात्र) -

चैत्र माह के नवरात्रि के प्रारंभ से बैगा जनजाति द्वारा ग्राम के मेडो (ग्राम सीमा पर) महामाई के स्थान पर एक अस्थाई कुरिया (घर) बनाया जाता है। घर निर्माण के लिए कुम्हार के घर की जली हुई मिट्‌टी लाई जाती है। गेंहूं के बीज को बांस की दो टोकरियों में मिट्‌टी डलकर रखा जाता है और आवश्कतानुसार समय पर पानी डाला जाता है। बनाये गये घर में एक मिट्‌टी का दिया जलाया जाता है। जिसे ज्योत जलाना कहा जाता है। देवी की स्तुति व पूजा बैगा सदस्य द्वारा ही की जाती है जिसे पण्डा (पूजारी) कहा जाता है। पण्डा प्रति दिन दीप जलाकर व नारियल अर्पित कर देवी की पूजा करता है। ज्योत पूरे नौ दिन तक जलाये रखना होता है। साथ ही पंचमी एवं अठवाही (पांचवे व आठवें दिन) के दिन विशेष पूजा आराधना की जाती है। महामाई में 03 या 05 वर्ष में बकरे की बलि दी जाती है।

महामाई की सेवा (आराधना) मांदर बजाते हुए माई जसगीत गाकर की जाती है। जसगीत की ध्वनि सुनकर कई महिला एवं पुरुषों पर देवी चड़ती है। और वह मांदर की थाप पर झूपने लगते है। जिसे पण्डा हूम (नारियल, अगरबत्ती, धूप) देकर देवी को शांत करता है।

नौवें दिन ज्वारा विसर्जन किया जाता है। इसके लिए 03 कुंवारी कन्याओं के द्वारा श्वेद वस्त्र धारण कर बांस की टोकरी में उगाई गई गेंहू व ज्योत को सिर में रखकर नदी के पास जाते है। पण्डा भी इस दिन श्वेत वस्त्र धारण करता है और कन्याओं के साथ चलता है। अन्य सदस्य मांदर बजाते व महामाई की जसगीत गाते सेवा भाव से नदी पर जाते है जहां पुनः पण्डा के द्वारा पूजा अर्चना करता है। उपस्थित सदस्य एक दूसरे के कान में ज्वारा खोंचते है और लाये गये सामग्रियों को ग्राम की सुख-समृद्धि की कामना के साथ जल में विसर्जित कर दिया जाता है।

2. अक्ती -

इस दिन को भांचा दान भी कहा जाता है। बैगा जनजाति में अपने बहन के पुत्र (भांजा) को अपनी इच्छा अनुसार वस्तु, पैसा, वस्त्र, धन-धान्य आदि का दान दिया जाता है। बैशाख माह की अक्ती के दिन बैगा जनजाति में वर्षा के पूर्वानुमान लगाने हेतु हाण्डी देखने की एक प्रक्रिया की जाती है। इस दिन बैगा जनजाति के लोगों के द्वारा ग्राम अथवा घर में एक स्थान पर सुखी मिट्टी के 04 ढेले को खुर या आधार के रुप में रखते है जो क्रमशः आषाढ़, सावन, भादो एवं कुंवार माह को इंगित करता है। इसके ऊपर पानी से भरा एक मिट्टी की हाण्डी रखी जाती है। जिसे 09 दिनों तक अवलोकन किया जाता है। जिस माह को इंगित किया गया ढेला अधिक गीला होगा, उस माह में वर्षा अधिक होने का अनुमान लगा लिया जाता है और इसी आधार पर फसल की बोआई की तैयारी की जाती है।

3. बिदरी -

बैसाख माह मे अक्ती के दिन धरती पूजा करते है। वर्ष भर के लिए हूम-गरास देते है। इस दिन ग्राम बैगा ठाकुर देव की विशेष पूजा करता है। इसी दिन कोदो, कुटकी आदि अनाज को फसल बुआई के पूर्व बैगा के द्वारा विशेष पूजा की जाती है। जिसे बीज बनाना कहा जाता है। पूजा के बाद बीज को सभी कृषक परिवारों को थोड़ी-थोड़ी मात्रा में दे दिया जाता है। परिवार उस बीज को अपने बोआई के लिए रखे गये बिजहा में मिलाकर फसल बोआई करते है।

इस दिन बीज बनाने के लिए बैगा द्वारा पडरा मुर्गा, नारियल, एक बोतल मंद, हूम के लिए सरई का लासा, अगरबत्ती आदि का उपयोग किया जाता है। यह पूजा अच्छे फसल उत्पाद एवं ग्राम की खुशहाली के लिए की जाती है।

4. हरेली -

यह त्यौहार सावन माह की अष्टमी के दिन को हरेली त्यौहार मनाया जाता है। बैगा जनजाति इस दिन द्वारा गाय को नमक खिलाया जाता है। इसके लिए चिंटी या कीडों के बुम्भोड़/भिम्भोरा (टीला) के ऊपर रख कर गाय को खाने दिया जाता है, जिससे गाय नमक के साथ थोड़ी मिट्टी भी खा लेती है। बैगा जनजाति में गाय के द्वारा नमक खाने को शुद्धि के रुप में माना जाता है।

इस दिन घरों के दरवाजों, खेतों, पशुघर, बाड़ी में विभिन्न औषधीय वृक्षों के डालिया यथा भेलवा डारा, बांस डारा, साल्हे डारा के साथ हसिया ढापुर व जोगी लट्ठी का लटकाया जाता है। इस दिन ही बच्चों के लिए बांस की गेड़ी बनायी जाती है जिसके ऊपर चढकर बच्चे मनोरंजन करते है बनाई गई गेड़ी को नवाखाई के दिन विसर्जित कर दिया जाता है।

5. देवली -

बैगा जनजाति में खेतों मे उगे हुए फसल को देवली कहा जाता है। बैगा ग्राम में विभिन्न कृषकों के खेत खलिहानों में नारियल व काले या भूरे मुर्गी की पूजेई देता है और खेतों की फसल उखाड़ता है। जिसे लेजाकर वह ग्राम-ठाकुर देव को अर्पित कर अच्छे फसल की कामना के साथ पूजा-अर्चना करता है। पूजा के पश्चात लाये गये फसल को पुनः खेतों में लगाता है। यह त्यौहार हरेली त्यौहार के बाद मनाया जाता है। ग्रामवासियों द्वारा अपने घरों में भी अपने ईष्ट-देवों, अन्न दाई, क्षीता कुंवारी, रातमाई की पूजा कर अच्छे फसल तथा उनकी कीट-पतंगों से रक्षा की कामना के साथ की जाती है।

6. पंचमी नवाखाई -

भादो माह की पंचमी के दिन (पांच दिन के चंदा में) तथा नवाखाई के 04 दिन पूर्व पंचमी तिहार मनाया जाता है। इस दिन नये आनाज के बने भोजन को अपने ईष्ट देव को भोग लगाया जाता है। यह त्यौहार ग्राम पटेल के घर सार्वजनिक रुप से मनाया जाता है। साथ ही यह त्यौहार केवल उन्ही ग्रामों में मनाया जाता है जहां का बैगा नाग-सांप को मनाने या भगाने या सर्प दंश के पश्चात जहर निकालना जानता हो तथा वह बैगा उस ग्राम में निवासरत हो । उसी ग्राम में पंचमी त्यौहार मनाया जाता है। पंचमी त्यौहार के दिन जंगल से कलिहारी / नाग फूल नामक फूल को लाया जाता है। यह फूल कभी भी घर में नही लाया जाता है और न ही खाया जाता है।

ग्रामवासियों द्वारा नाग बम्भोर (भिम्भोरा) में नाग सांप के नाम से नारियल, दूध और लाये गये कलिहारी फूल को चढ़ाया जाता है। पूर्व में ग्रामवासियों द्वारा यह त्यौहार धूम-धाम से मनाया जाता था। वर्तमान में केवल बुजुर्गों द्वारा पंचमी त्यौहार सांकेतिक रुप से नेंग पुरा किया जाता है।

7. नवाखाई -

बैगा जनजाति में नवाखाई का त्यौहार पंचमी त्यौहार के 04 दिनों के बाद भादो माह की नवमी के चंदा पर (भाद्र माह के शुक्ल पक्ष की नवमी के दिन) मनाया जाता है। नवाखाई के त्यौहार के लिए नयी फसल का थोड़ा-थोड़ा भाग मोहलाइन पत्ते में रखकर अपने ईष्ट देवों को अर्पित किया जाता है। इसके लिए नया फसल, नारियल, धूप, मोहलाईन पत्ता, उड़द की दाल, नया चांवल, सांवा, मक्का, खीरा आदि को अपने ईष्ट देव, पूर्वज देव को पूजा अर्चना कर अपर्ण किया जाता है। इसे चेरवा छिंटकाना या भोग लगाना कहा जाता है। पूर्वज को चेरवा का भोग केवल परिवार का पुरुष मुखिया द्वारा लगाया जाता है, अन्य सदस्य को भोग लगाने की अनुमति नही होती है। इस चेरवा को किसी अन्य परिवार के सदस्य को किसी भी स्थिति में नही दिया जाता है। वरन् चेरवा का भाग स्वयं की विवाहिता पुत्री को देना भी निषेध है। नवाखाई के भोग के लिए नये चांवल की भात और उड़द की दाल को घर की महिला मुखिया या बड़ी बहू के द्वारा ही पकाया जाता है। तथापि बड़ी बहू तभी चेरवा पकाती है जब उसे पुत्र की प्राप्ति हो चुकी हो।

बैगा जनजाति में मान्यता है कि नयी फसल का प्रथम भोग ईष्ट देव को नही चढ़ाने से पारिवारिक या सामाजिक व्याधा आती है। इस कारण यह त्यौहार प्रत्येक परिवार द्वारा अनिवार्य रुप से मनाया जाता है। बैगा जनजाति में एक गोत्र के सदस्य समूह में भी नवाखाई का त्यौहार मनाते है इस हेतु वे किसी एक स्थान या एक घर में चेरवा बनाते है और कुल देव को अर्पित कर प्रसाद स्वरुप भोग को ग्रहण करते है।

8. देवारी -

यह त्यौहार कार्तिक पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है। बैगा जनजाति में देवारी त्यौहार को गोवर्धन पूजा के रुप मे मनाया जाता है। इस दिन घर के मवेशियों विशेषकर गाय-बैल के लिए पृथक से चांवल का भात बनाया जाता है। गोट (डांग-कांदा), उड़द के पत्ते, कुम्हड़ा, खांस (झुरगा) को एक साथ मिलाकर सब्जी के रुम में बनाया जाता है।

उक्त सामग्री तैयार हो जाने के बाद इसे सर्वप्रथम बांस के नये सूपा या कांसे की थाली मे निकालते है और इसे केले के पत्ते में परोसा जाता है। भोज परोसेने के पूर्व घर के एक स्थान पर गोबर से लिपाई कर चांवल आटे से रंगोली के समान चौक पूरते है और उसके पास चांवल आटे का दीपक भी जलाते है। इसके बाद भोज को पशुओं के लिए परोसा जाता है। जहां पशुओं (गाय-बैल) को लाकर उसकी पूजा की जाती है भोज उन्हें खाने के लिए दिया जाता है। इस प्रकार पशुओं के खाने के बाद शेष बचे भाग (जुठन) को सह परिवार प्रसाद स्वरुप ग्रहण किया जाता है। जिसे खिचड़ी या रौंदा भात कहा जाता है।

इस त्यौहार के पीछे मान्यता है कि, इससे घर में लक्ष्मी (पशुधन) स्वस्थ व निरोगी रहते है तथा परिवार को समृद्धि प्रदान करते है।

9. मोहती नवाखाई -

बैगा जनजाति में मोहती नवाखाई का विशेष महत्व है क्योंकि यह त्यौहार 09 वर्ष के अंतराल में एक बार मनाया जाता है। कार्तिक पूर्णिमा के दिन मोहती नवाखाई का त्यौहार मनाया जाता है। बैगा जनजाति के अनुसार यह त्यौहार कार्तिक और 9 वर्षाकाल के बीत जाने के बाद ही मनाया जाता है। यह त्यौहार ग्राम सीमा के बाहर जंगल में मनाया जाता है। मोहती नवाखाई का त्यौहार केवल बैगा पुरुषों द्वारा मनाया जाता है। इस त्यौहार के लिए बैगा सदस्यों

के द्वारा ग्राम के बाहर जंगल में स्थान पर मोहलाईन वृक्ष की डाल से एक अस्थायी झोपड़ी का निर्माण किया जाता है। इसी झोपड़ी में मोहती वृक्ष के पेड़ के पत्ते, कुटकी (जो बिना जुताई वाली भूमि पर उपजा हो), प्राकृतिक रुप से प्राप्त शहद का उपयोग किया जाता है।

उक्त सामग्रियों को मोटे बांस का दो गांठों का भाग लेकर उसके एक गांठ के भाग को अलग कर एक पात्र के रुप में तैयार किया जाता है जिसे ठोड़हा कहा जाता है, में कुटकी, शहद को डालकर उसे मोहलाईन पत्ते से बंद कर दिया जाता है तथा इसे आग में पकाया जाता है। ठोड़हा की संख्या उपस्थित सदस्यों की संख्या के अनुसार 10, 20 अथवा अधिक हो सकती है।

आग में तपकर बांस के रंग मे परिवर्तन को देखकर भीतर की सामग्री के पक जाने का अनुमान लगा लिया जाता है। इसके बाद बांस को तोड़कर पके भोज को मोहलाईन के पत्ते में निकाल लिया जाता है। जमीन पर मोहलाईन डाल का आभासी नौ घर बनाया जाता है जिसके अंतिम घर में बहेरवास, नगबधेसूर को सांकेतिक रुप से स्थापित किया जाता है। सर्वप्रथम बहेरवास, नगबधेसूर आदि देवों को छिटका देते है या अर्पण करते है। देवों को अर्पण करने बाद शेष बचे भोग को सभी सदस्य बांटकर वहीं खाते है।

बैगाओं में यह त्यौहार वन में निवास करने वाले वन्य जीवों से सदस्यों व परिवार की रक्षा के लिए जंगल देवता को प्रसन्न रखने के उद्‌देश्य से मनाया जाता है।

बैगा जनजाति में यह मान्यता है कि, 09 वर्ष में मोहती रस खाते है। 10 वें वर्ष को बिजोर साल कहा जाता है जिसमें इस वर्ष बहुत अधिक शादियां होती है तथा 11 वें वर्ष को रंडौर साल कहा जाता है इस वर्ष शादी विवाह प्रतिबंधित रहता है तथापि यदि कोई युगल विवाह कर लेता है तो या तो उसकी कोई संतान नही होती है या इनकी मृत्यु होने की संभावना रहती है, ऐसी मान्यता है।

10 छेरता -

यह त्यौहार पुष माह के अंतिम दिन मनाया जाता है। यह त्यौहार विशेष रुप से बच्चों के द्वारा मनाया जाता है। इस दिन बालकों का एक समूह ग्राम के घर-घर जाकर चांवल या धान मांगते है। जिसे ग्राम के एक स्थान पर बालक-बालिकाओं द्वारा महीन कुटकर आटा बना लिया जाता है। इसके बाद बालिकाएं उस आटे से रोटियां बनाती है और चुल्हें मे पकाती है। रोटी बन जाने के बाद कन्याएं रोटी को एक स्थान पर कपड़ा बिछाकर रख देती है। इस प्रकार रखे रोटी को बालक चुराने का प्रयास करते है। जिस पर कन्याएं उन्हें जलती लकड़ी या लकड़ी से डराकर दूर भगाने का प्रयास करती है। बालको के द्वारा रोटी चुरा लेने पर वह रोटी उनकी हो जाती है। इसके बाद सभी बच्चे मिलकर उन रोटियों को उस स्थान पर ही खाते है और नृत्य करते है।

इससे माना जाता है कि, परिवार में बच्चों के द्वारा ठीक रुप से खाद्यान की सूरक्षा की जा सकेगी। तत्संबंध में एक लोकोक्ति अनुसार एक समय कोई राजा भ्रमण पर गया जहां उसकी पुत्री के द्वारा जंगल में रोटियां बनाई गई। राजा एक वृक्ष के नीचे रोटी खाने लगा जिसे वृक्ष पर बैठा कौआ देख रहा था। राजा के द्वारा पूरी रोटी खा ली गई और शेष कुछ भी नहीं बचा। इस पर कौआ द्वारा राजा को निर्धन/गरीब हो जाने का श्राप दे दिया गया था। अतः इसी भय के कारण बैगा जनजाति में छेरता पर्व मनाया जाता है।

बैगा जनजाति में प्रचलित विशेष उत्सव एवं मड़ई

दशेला नाचा -

हिन्दू पंचाग के शरद पूर्णिमा के बाद से दशेला नाचा उत्सव की तैयारी शुरु हो जाती है जो पुष माह के पूर्णिमा तक चलता है। बैगा जनजाति में फसल कटाई के बाद यह उत्सव एक ग्राम से दूसरे ग्राम एक टोली या समूह में जाकर खुशहाली के रुप में मनाया जाता है। यह समूह केवल पुरुषों या केवल महिलाओं का होता है। इसमें एक ग्राम के पुरुषों (विवाहित व अविवाहित) का समूह दूसरे ग्राम में जाता है। ग्राम में टोली जाने के पूर्व उस ग्राम में पूर्व सूचना दे दी जाती है कि समूह अमूख दिवस को दशेला नाचने आयेंगें। जो समूह जिस ग्राम में जाता है, वह समूह अपने साथ एक समय के खाने-पीने की सामग्री भी साथ लेकर जाते है। किसी ग्राम से यदि पुरुषों का समूह दूसरे किसी ग्राम में दशेला नाचा के लिए जाता है तो उक्त ग्राम में वहां की महिलाओं (विवाहित व अविवाहित) का एक समूह उनका अभिवादन करता है। इसी प्रकार जब किसी ग्राम से महिलाओं का समूह किसी दूसरे ग्राम में दशेला नाचा के लिए जाता है जो उक्त ग्राम के पुरुषों का समूह उनका अभिवादन करते है। इसके बाद दोनों समूह अपने पारंपरिक परिधान में परस्पर गीत गाते हुए नृत्य करते है। इस समय महिलाओं का समूह रीना लोकगीत का गायन करती है और पुरुष सदस्यों द्वारा करमा गीत का गायन किया जाता है।

समूह के सदस्य जब दूसरे ग्राम में जाते है तो वहां व अलग-अलग घरों में ठहरते है।

फाग नाचा –

छेरता त्यौहार मनाने के बाद से फागुन माह के प्रारंभ से फाग त्यौहार मनाया जाता है और इसी के साथ-फाग नाचा का आयोजन ग्रामों में जाकर किया जाता है। फागुन माह के प्रारंभ होने की पूर्व रात्रि को सेमर वृक्ष की डाल काटने ग्राम के पुरुष वर्ग जाते है। सेमर डाल काटने से पूर्व उसमें चांवल, दाल और कुछ सिक्के डाल दी जाती है। काटे गये सेमर डाल को जमीन पर रखे बगैर उसे लेकर ग्राम सीमा तक लाते है। ग्राम सीमा में एक गड्डा खोदकर उस गड्डे में मुर्गी का एक अण्डा और कुछ सिक्के के साथ सेमर डाल को गड़ा दिया जाता है। सेमर डाल में पुराने अनुपयोगी झाड़ू और सूपा भी बांध दिया जाता है।

कालांतर में उक्त सेमर डाल के स्थान में प्रतिदिन संध्या के समय ग्राम के पुरुषों द्वारा फागगीत मांदर और टीमकी वाद्ययंत्रों के साथ गाया जाता था। वर्तमान में यह परंपरा सांकेतिक रुप से बैगा जनजाति में विद्यमान है। इस अवसर में पूरे एक माह तक सूखी लकड़ियां एकत्र किया जाता है तथा होलिका दहन के दिन ग्राम मुखिया या पटेल के द्वारा विधिविधान से प्रातः 4-5 बजे जलाया जाता है। होली जलाने के बाद एक बैगा द्वारा ग्राम के रोग, कष्ट एवं समस्यो को दूर करने के उद्देश्य से एक मुर्गी की पुजेई होली जले स्थान पर दी जाती है। सभी के द्वारा रंग-गुलाल खेलते हुए फागगीत गाकर होली का त्यौहार धूम-धाम से मनाया जाता है। दिन में पुरुषों की टोली द्वारा घर-घर जाकर भोजन एकत्र किया जाता है जिसे वे होलिका दहन के स्थान पर सम्मिलित रुप से खाते है।

यह त्यौहार आगामी 13 दिवस तक मनाया जाता है। इसमें पुरुषों की टोली एक ग्राम से दूसरे ग्राम जाकर भी फागगीत गाते है जिसमें उन्हें ग्रामवासियों द्वारा चांवल और पैसे दिये जाते है।

मड़ई -

बैगा निवासित ग्राम समूह में माता मटिया को मानने वाले कुल के द्वारा प्रत्येक वर्ष कुंवार से फागुन माह में पृथक-पृथक ग्राम समूहो द्वारा अलग-अलग तिथियों में मड़ई का आयोजन किया जाता है। मड़ई आयोजन के पूर्व ग्राम समूहों द्वारा मड़ई मनाने के संबंध में तिथि का निर्धारण कर सूचना का प्रसार कर दिया जाता है। मड़ई पर्व मुख्यतः घर देवता के लिए मनाया जाता है, इसमें घर देव के प्रतीक चिन्हों को घर का मुखिया मड़ई स्थल की परिक्रमा कर पुनः उन्हें घर में स्थापित कर देता है। मड़ई मेला में बैगा परिवार के मुखिया द्वारा उनके कुल मे प्रचलित देव के अनुसार नारियल, चांवल, खरक आदि को मड़ई स्थल पर ले जाया जाता है। मड़ई का मुख्य उद्देश्य घर देवों को आपस में मेल कराना होता है। इनमें मान्यता है कि, जो कुल चण्डी माता को मानते है और यदि चण्डी माता उनके शरीर में प्रवेश कर जाती है तो वे अपने शरीर के विभिन्न अगों जैसे चीभ, गाल, बांह आदि को नुकीले औजारों जिसे बाना कहते है से बेध लेते है, इस प्रकार चण्डी माता के मड़ई स्थान पर पहुंचने पर मड़ई बैगा द्वारा माता को कर्मकाण्डों के द्वारा शांत कराया जाता है। इसके बाद उन्हें वापस घर में लाकर स्थापित कर दिया जाता है।

संचालनालय, आदिमजाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान

सेक्टर 24, नवा रायपुर अटल नगर, छत्तीसगढ़

Website: cgtrti.gov.in, E-mail: trti.cg@nic.in

Phone: 0771-2960530, Fax: 0771-2960531